

इस्लाम की विशेषता

लेखक

शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

संशोधन

शफीकुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

islamhouse.com

1429-2008



अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अति मेहरबान और दयालू है।

इस्लाम की विशेषता

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتَمَمْتُ عَلَيْكُمْ
نِعْمَتِي وَرَضِيْتُ لَكُمْ الْإِسْلَامَ دِينًا﴾ (المائدة: 3)

“आज मैं ने तुम्हारा धर्म सम्पूर्ण कर दिया, और अपनी नेमतें तुम पर पूरी कर दीं और इस्लाम को तुम्हारे लिए धर्म स्वरूप पसन्द कर लिया।” (सूरतुल माईदा: 3)

तथा फरमाया:

﴿قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي فَلَا
أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ
الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ﴾ (يونس: 104)

“आप कह दीजिए कि ऐ लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के प्रति सन्देह में हो, तो मैं उन की उपासना नहीं करता जिन की तुम अल्लाह को छोड़ कर उपासना करते हो, किन्तु मैं उस अल्लाह की उपासना करता हूँ जो तुम्हारी जान निकालता है।” (सूरत यूनुस:१०४)

तथा अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرَسُولِهِ
يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا
تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴾
(الحديد: ٢٨)

“ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और उस के पैग़म्बर पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत (कृपा) का दोहरा भाग देगा, और तुम्हें नूर-प्रकाश- प्रदान करे गा, जिसके प्रकाश में तुम चलो फिरो गे, और तुम्हारे गुनाह भी क्षमा कर देगा, और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालू है।” (सूरतुल हदीद:२८)

सहीह बुख़ारी में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“तुम्हारा उदाहरण और यहूदियों और ईसाईयों का उदाहरण उस आदमी के समान है जिस ने मज़दूरी पर कुछ मज़दूर रखे और कहा कि कौन सुबह से दूपहर तक मेरा काम एक कीरात पर करे गा? तो यहूद ने किया। फिर उस ने कहा कि कौन दूपहर से अस्त्र की नमाज़ तक मेरा काम एक कीरात पर करे गा? तो ईसाईयों ने किया। फिर उस ने कहा कि कौन अस्त्र की नमाज़ से लेकर सूरज डूबने तक मेरा काम दो कीरात पर करे गा? तो वह तुम लोग हो। इस पर यहूद और ईसाई क्रोधित हो गए और कहा कि यह क्या बात हुई काम हम अधिक करें और मज़दूरी कम मिलें? उस ने कहा: क्या मैं ने तुम्हारा कुछ हक मार लिया है? वह बोले: नहीं, तो उस ने कहा कि यह तो मेरा फज़ल -कृपा- है जिसे चाहूँ दूँ।”

तथा सहीह बुख़ारी में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“अल्लाह तआला ने हम से पहले लोगों को जुमा (की फज़ीलत) से वंचित रखा, चुनांचे यहूदियों के

भाग में शनिवार का दिन आया और ईसाईयों के भाग में रविवार का, फिर अल्लाह तआला हमें लाया और जुमा के दिन का मार्गदर्शन किया, और इसी प्रकार वह कियामत के दिन भी हम से पीछे होंगे, हम दुनिया वालों में तो सब से अन्तिम समुदाय हैं, किन्तु कियामत के दिन सब से आगे होंगे।”

और सहीह बुखारी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तालीकन वर्णित है कि आप ने फरमाया:

“अल्लाह के निकट सब से पसन्दीदा धर्म, सरल मिल्लते इब्राहीम है।”

उबै बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्होंने ने फरमाया:

“तुम लोग सुन्नत और सिराते मुस्तकीम -सीधे मार्ग- पर चलते रहो, क्योंकि ऐसा नहीं हो सकता कि कोई व्यक्ति सुन्नत और सिराते मुस्तकीम पर रह कर अल्लाह का ज़िक्र करे और अल्लाह के डर से उसकी आँखें आँसू बहाएँ और फिर उसे जहन्नम की आग छू ले, और जो भी व्यक्ति सुन्नत और सिराते मुस्तकीम पर गमन हो कर अल्लाह का ज़िक्र

करे, फिर अल्लाह के डर से उसके रोंगटे खड़े हो जाएँ, तो इस का उदाहरण उस वृक्ष के समान है जिस के पत्ते सूख चुके हों और सहसा आँधी आए और उस के पत्ते झड़ जाएं, इसी प्रकार उस व्यक्ति के गुनाह भी झड़ जाते हैं जिस प्रकार उस वृक्ष के पत्ते झड़ जाते हैं, सिराते मुस्तकीम और सुन्नत के अनुसार की हुई थोड़ी उपासना भी, सिराते मुस्तकीम और सुन्नत के विरुद्ध की हुई अधिक उपासना से उत्तम है।”

अबुद-दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्होंने ने फरमाया:

“बुद्धिमानों का सोना और उनका खाना-पीना क्या ही अच्छा है, ये मूर्खों की रतजगाई और उन के रोज़ों पर किस प्रकार प्रधानता ले जाते हैं, तक्वा और यकीन के साथ कण बराबर नेकी, धोखे से पीणित लोगों की पहाड़ बराबर उपासना से कहीं अधिक महानता, विशेषता और वज़न रखती है।”

इस्लाम को स्वीकार करना अनिवार्य है

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿ وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي
الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴾ (آل عمران: ८५)

“जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म ढूँढ़े तो उसका धर्म कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा, और वह प्रलोक में घाटा उठाने वालों में से होगा।” (सूरत आल-इम्रान: ८५)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿ إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ﴾ (آل عمران: १९)

“निःसन्देह अल्लाह के निकट धर्म इस्लाम ही है।”
(सूरत आल-इम्रान: १९)

तथा फरमाया:

﴿ وَأَنَّ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ
فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ﴾ (الأنعام: १५३)

“और यही धर्म मेरा मार्ग है जो सीधा है, अतः इसी मार्ग पर चलो, और दूसरी पगडण्डियों पर न चलो कि वह तुम्हें अल्लाह के मार्ग से अलग कर दें गी, इसी का अल्लाह तआला ने तुम को आदेश दिया है तकि तुम परहेज़ गार (संयमी, ईश-भय रखने वाले) बनो ।” (सूरतुल-अन्आम: 9५३)

मुजाहिद कहते हैं कि इस आयत में पगडण्डियों से अभिप्राय “बिदआत एवं सन्देह” हैं ।

आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“जिस ने हमारे इस धर्म में कोई ऐसी चीज़ निकाली जो धर्म से नहीं है तो वह मर्दूद (अस्वीकृत) है ।”
(बुखारी एवं मुस्लिम)

एक दूसरी रिवायत में है:

“जिस ने कोई ऐसा काम किया जिस पर हमारा आदेश नहीं है तो वह काम मर्दूद (अस्वीकृत) है ।”
(सहीह मुस्लिम)

सहीह बुख़ारी में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“मेरी उम्मत का प्रत्येक व्यक्ति स्वर्ग में जाए गा, सिवाय उस आदमी के जो अस्वीकार कर दे, पूछा गया कि स्वर्ग में प्रवेश करना कौन अस्वीकार कर देगा? आप ने फरमाया: “जिस ने मेरा आज्ञा पालन किया वह स्वर्ग में प्रवेश करे गा, और जिस ने मेरी अवज्ञा की उस ने स्वर्ग में जाने को अस्वीकार किया।”

और सहीह बुख़ारी में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“अल्लाह के निकट सब से अधिक नापसन्दीदा-घृणित- लोग तीन हैं: *प्रथम*: हरम में बेदेनी (नास्तिकता) का प्रदर्शन करने वाला, *द्वितीय*: इस्लाम के अन्दर जाहिलियत का मार्ग ढूँढ़ने वाला, *तृतीय*: किसी मुसलमान के अवैध खून बहाने का मुतालबा करने वाला।” (सहीह बुख़ारी)

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं:

“पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फर्मान “जाहिलियत का मार्ग” में पैग़म्बरों के लिए हुए धर्म के विरुद्ध प्रत्येक जाहिलियत का मार्ग सम्मिलित है, चाहे वह सामान्य हो या कुछ लोगों के साथ विशिष्ट हो, यहूद एवं ईसाईयों का हो या मूर्तिपूजकों का, या इनके अतिरिक्त किसी अन्य का।”

और सहीह बुख़ारी में हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्होंने ने फरमाया:

“ऐ क़ारियों की जमाअत! सीधे मार्ग पर गमन रहो, यदि तुम सीधे मार्ग पर रहो गे तो बहुत आगे निकल जाओ गे, और यदि दाहिने बायें मुड़ो गे तो अति पथ-भ्रष्ट हो जाओ गे।”

और मुहम्मद बिन वज़्ज़ाह ने इस प्रकार वर्णन किया है कि हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में प्रवेश करते और हलकों के निकट खड़े हो कर यह फरमाते।

वह अधिक वर्णन करते हैं कि हम से सुफ़यान बिन उवैनह ने मुजालिद से और मुजालिद ने शअबी से और शअबी ने

मसरूक़ से वर्णन करते हुए कहा है कि अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया:

“बाद मे आने वाला हर वर्ष अपने पिछले वर्षों से अधिक बुरा है, मैं यह नहीं कहता कि फ़लाँ साल, फ़लाँ साल से अधिक वर्षा वाला है, और न ही यह कहता हूँ कि फ़लाँ साल फ़लाँ साल से अधिक हरा-भरा है, और न ही यह कहता कि हूँ कि फ़लाँ अमीर, फ़लाँ अमीर से श्रेष्ठ है, बल्कि वास्तविक बात यह है कि तुम्हारे उलमा और अच्छे लोगों की समाप्ति हो रही है, इस के पश्चात ऐसे लोग पैदा होंगे जो धार्मिक मामलों को अपनी सोच-विचार पर क़्यास करेंगे, जिस के कारण इस्लाम को ध्वस्त और नष्ट कर दिया जाए गा।”

इस्लाम की व्याख्य

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ﴾
(آل عمران: २०)

“फिर भी यदि यह आप से झगड़ें तो आप कह दें कि मैं ने और मेरे मानने वालों ने अल्लाह तआला के सामने अपना सिर झुका दिया है।” (सूरत आल-इम्रान: २०)

सहीह मुस्लिम में उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“इस्लाम यह है कि तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के पैग़म्बर हैं, और नमाज़ स्थापित करो, ज़कात दो, रमज़ान के रोज़े रखो और सामर्थ्य हो तो अल्लाह के घर -कअ़्बा- का हज्ज करो।” (सहीह मुस्लिम)

और सहीह हदीस में अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्फूअन वर्णित है:

“मुसलमान वह है जिस की जुबान और हाथ से दूसरे मुसलमान सुरक्षित रहें।”

और बहज़ बिन हकीम से वर्णित है, वह अपने बाप के वास्ते से अपने दादा से वर्णन करते हैं कि उन्होंने ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस्लाम के विषय में प्रश्न किया तो आप ने फरमाया:

“इस्लाम यह है कि तुम अपना हृदय अल्लाह को सौंप दो, अपना चेहरा अल्लाह की ओर फेर दो, फर्ज नमाज़ें पढ़ो और फर्ज ज़कात दो।” इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है।

अबू क़िलाबा एक शामी (सीरियन) आदमी से वर्णन करते हैं कि उस के बाप ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया कि इस्लाम क्या है? आप ने फरमाया:

“इस्लाम यह है कि तुम अपना दिल अल्लाह के हवाले कर दो, और मुसलमान तुम्हारी जुबान और तुम्हारे हाथ से सुरक्षित रहें।” फिर उन्होंने प्रश्न

किया कि इस्लाम का कौन सा काम सर्वश्रेष्ठ है? आप ने फरमाया: ईमान। उस ने कहा कि ईमान क्या है? आप ने फरमाया: “ईमान यह है कि तुम अल्लाह पर, उस के फरिश्तों पर, उस की उतारी हुई पुस्तकों पर, उसके पैगम्बरों पर और मरने के बाद दुबारा उठाए जाने पर विश्वास रखो।” (इस हदीस को शैखुल-इस्लाम इब्ने तैमियह ने ‘किताबुल-ईमान’ के अन्दर उल्लेख किया है और उसके बाद फरमाया कि इसे इमाम अहमद और मुहम्मद बिन नम्र मर्वज़ी ने रिवायत किया है)

अल्लाह तआला के फर्मान ﴿ وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ ﴾
﴿ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ ﴾ की व्याख्या

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿ وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ ﴾
(آल عمران: ८५)

“और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म तलाश करे तो उस का धर्म हरगिज़ स्वीकार नहीं किया जाए गा।” (सूरत-आल इम्रान: ८५)

अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते हैं कि पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“क़ियामत के दिन बन्दों के आमाल उपस्थित हों गे, चुनांचे नमाज़ उपस्थित होगी और कहे गी कि ऐ पालनहार! मैं नमाज़ हूँ, अल्लाह तआला फरमाये गा: तू खैर पर है, फिर ज़कात उपस्थित होगी और कहे गी कि ऐ पालनहार ! मैं ज़कात हूँ, अल्लाह तआला फरमाए गा: तू भी खैर पर है, फिर रोज़ा उपस्थित होगा और कहे गा कि ऐ पालनहार! मैं रोज़ा हूँ,

अल्लाह तआला फरमाए गा: तू भी खैर पर है, इस के बाद बन्दे के शेष आमाल इसी प्रकार उपस्थित हों गे और अल्लाह तआला फरमाए गा : तुम सब खैर पर हो, फिर इस्लाम उपस्थित होगा और कहे गा कि ऐ पालनहार! तू सलाम है और मैं इस्लाम हूँ, अल्लाह तआला फरमाए गा: तू भी खैर पर है, आज मैं तेरे ही कारण से पकड़ करूँगा और तेरे ही कारण से प्रदान करूँगा, अल्लाह तआला ने अपनी किताब कुरआन मजीद में फरमाया:

﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي
الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾

“और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म तलाश करे तो उस का धर्म हरगिज़ स्वीकार नहीं किया जाए गा, और वह आखिरत में घाटा उठाने वालों में से होगा।।” (सुरत-आल इम्रान:८५)

इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है।

और सहीह मुस्लिम में आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“जिस ने कोई ऐसा काम किया जिस के बारे में हमारा आदेश नहीं है तो वह काम मरदूद (अस्वीकृत) है।” इस हदीस को इमाम अहमद ने भी रिवायत किया है।

किताबुल्लाह की पैरवी करके उसके अतिरिक्त से निस्पृह -बे नियाज़- होना अनिवार्य है

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تَبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ﴾
(النحل: ११९)

“और हम ने आप पर यह किताब उतारी है जिस में हर चीज़ का स्पष्ट उल्लेख है।” (सूरतुन-नहल: ८६)

सुनन नसाई आदि में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में तौरात का एक पन्ना देखा तो फरमाया:

“ऐ खत्ताब के बेटे! क्या तुम हैरत में पड़े हो! मैं तुम्हारे पास स्पष्ट और उज्ज्वल शरीअत ले कर आया हूँ, यदि मूसा जीवित होते और तुम मुझे छोड़ कर उन की पैरवी करते तो पथ-भ्रष्ट हो जाते।”

एक दूसरी रिवायत में है:

“यदि मूसा जीवित होते तो उन्हें भी मेरी पैरवी करनी पड़ती।”

यह सुन कर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि:

“मैं अल्लाह से प्रसन्न हूँ उसे अपना पालनकर्ता मान कर, इस्लाम से प्रसन्न हूँ उसे अपना दीन समझ कर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रसन्न हूँ उन्हें अपना नबी मान कर।”

इस्लाम के दावा से निकल जाने का वर्णन

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿هُوَ سَمَّاكُمْ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلِ وَفِي هَذَا﴾ (الحج: १४)

“उसी अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है इस कुरआन से पहले और इस में भी।”

(सूरतुल-हज्ज:७८)

हारिस अशूअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया:

“मैं तुम्हें उन पाँच बातों का आदेश देता हूँ जिन का अल्लाह तआला ने मुझे आदेश दिया है: हाकिम-शासक- की बात सुनने और उस की पैरवी करने का, जिहाद का, हिज्रत का और मुसलमानों की जमाअत से जुड़े रहने का, क्योंकि जो व्यक्ति जमाअत से बालिश्त बराबर भी दूर हो उस ने अपनी गर्दन से इस्लाम का पट्टा निकाल फेंका, परन्तु यह कि वह जमाअत की ओर पलट आए, और जिस ने जाहिलियत की पुकार लगाई वह

जहन्नमी है।” यह सुन कर एक व्यक्ति ने कहा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! चाहे वह नमाज़ पढ़े और रोज़े रखे? फरमाया: “हाँ, चाहे वह नमाज़ पढ़े और रोज़ा रखे, अतः ऐ अल्लाह के बन्दो! तुम उस अल्लाह की पुकार लगाओ जिस ने तुम्हारा नाम मुसलमान और मोमिन रखा है।” इस हदीस को इमाम अहमद और त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है, और त्रिमिज़ी ने इसे हसन सहीह कहा है।

और सहीह बुखारी एवं मुस्लिम में है:

“जो जमाअत से बालिशत बराबर भी जुदा हुआ, और इसी अवस्था मे मर गया तो उस की मौत जाहिलियत की मौत है।”

तथा सहीह हदीस में है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“क्या जाहिलियत की पुकार लगाई जा रही है और मैं तुम्हारे बीच मौजूद हूँ?”

शैखुल इस्लाम अबुल अब्बास इब्ने तैमिय्या फरमाते हैं:

“इस्लाम और कुरआन के दावा से खारिज हर चीज़, चाहे वह नसब हो या स्वदेश हो, या कौम हो या

धर्म हो या तरीका हो, सब जाहिलियत की पुकार में सम्मिलित है, बल्कि जब मुहाजिर और अन्सारी दो सहाबी के बीच झगड़ा हुआ और मुहाजिर ने मुहाजिरों को पुकारा और अन्सारी ने अन्सारियों को आवाज़ दी, तो पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “क्या जाहिलियत की पुकार लगाई जा रही है और मैं तुम्हारे बीच मौजूद हूँ?” और इस बात से आप बहुत अप्रसन्न हुए।” शैखुल इस्लाम इब्ने तैमि या का कलाम समाप्त हुआ।

इस्लाम में सम्पूर्ण रूप से प्रवेश करना और उसके अतिरिक्त अन्य धर्मों को त्याग कर देना अनिवार्य है

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً﴾
(البقرة: २०८)

“ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे पूरे प्रवेश हो जाओ।” (सूरतुल बकरह:२०८)

तथा फरमाया:

﴿أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ
وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ﴾ (النساء: ६०)

“क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जिन का दावा तो यह है कि जो कुछ आप पर और जो कुछ आप से पहले उतारा गया उस पर उनका ईमान है।”
(सूरतुन-निसा:६०)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ﴾ (الأنعام: ١٥٨)

“निःसन्देह जिन लोगों ने अपने धर्म को अलग-अलग कर दिया और गुट-गुट बन गए आप का उन से कोई सम्बन्ध नहीं।” (सूरतुल-अन्आम: 9५E)

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा अल्लाह तआला के इस कथन:

﴿يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ﴾

“जिस दिन कुछ चेहरे चमक रहे होंगे और कुछ काले।”

की व्याख्या में कहते हैं:

“अहले सुन्नत व जमाअत के चेहरे उज्ज्वल होंगे, और अहले बिद्अत और साम्प्रदायिक लोगों के चेहरे काले होंगे।”

अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है, वह बयान करते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“मेरी उम्मत पर बिल्कुल वैसा ही समय आएगा जैसा कि बनी इस्राईल पर आया था, यहाँ तक कि यदि उन में किसी ने अपनी माँ के साथ खुल्लम खुल्ला बलात्कार किया होगा तो मेरी उम्मत में भी इस प्रकार का व्यक्ति होगा जो ऐसा करेगा, तथा बनी इस्राईल बहत्तर फिकों (दलों) में बट गए थे, किन्तु मेरी यह उम्मत तिहत्तर फिकों में बट जाएगी, उन में से एक के अतिरिक्त शेष सब नरकवासी होंगे।” सहाबा ने पूछा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! वह नजात पाने वाला फिकी कौन होगा? फरमाया: “वह जो उस मार्ग पर चले जिस मार्ग पर मैं हूँ और मेरे सहाबा हैं।”

जो मोमिन अल्लाह ताअला से मुलाकात की आशा रखता है उसे इस स्थान पर सादिक व मस्दूक़ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस विशेष रूप से आप के फर्मान “जिस तरीके पर मैं हूँ और मेरे साथी हैं” पर गौर करना चाहिए। यह हदीस कितनी बड़ी नसीहत है यदि जिन्दा दिलों से इसका वास्ता हो! इस हदीस को इमाम त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है, तथा इन्होंने इसे अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के वास्ते से रिवायत कर के इसे सहीह कहा है,

किन्तु इस रिवायत में जहन्नम का उल्लेख नहीं है, यह हदीस मुस्नद अहमद और सुनन अबू दाऊद में मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के तरीक़ से वर्णित है, जिस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फर्मान है:

“मेरी उम्मत में एक ऐसी क़ौम प्रकट होगी जिन की नसों में यह खाहिशात इस प्रकार घुस जाएं गी, जिस प्रकार पागल कुत्ते के काटने से पैदा होने वाली बीमारी काटे हुए व्यक्ति की नसों में प्रवेश कर जाती है, फिर उस की शरीर का कोई नस और कोई जोड़ उस के प्रभाव से सुरक्षित नहीं रहता।”

इस से पहले पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फर्मान उल्लिखित हो चुका है कि:

“इस्लाम में जाहिलियत का तरीक़ा ढूँढने वाला”
(अल्लाह के निकट तीन सब से नापसन्दीदा लोगों में से है।)

बिद्अत बड़े-बड़े गुनाहों से भी अधिक सख्त है

अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ﴾ (النساء: ६८).

“अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किए जाने को क्षमा नहीं करेगा, और इस के अतिरिक्त जिसे चाहे गा क्षमा कर दे गा।” (सूरतुन-निसा:४८)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ﴾ (الأنعام: १६६)

“और उस से बड़ कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह तआला पर बिना किसी प्रमाण के झूठा आरोप लगाता है।” (सूरतुल अन-आम:१४४)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمِنْ أَوْزَارِ
الَّذِينَ يَضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِلَّا سَاءَ مَا يَزُرُونَ﴾
(النحل: ٢٥)

“ताकि क़ियामत के दिन यह लोग अपने पूरे बोझ के साथ ही उन के बोझ के भी भागी दार हों जिन्हें अनजाने से पथ-भ्रष्ट करते रहे, देखो तो कैसा बुरा बोझ उठा रहे हैं।” (सूरतुन-नहल: २५)

और सहीह बुख़ारी में है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़वारिज के विषय में फरमाया:

“उन्हे जहाँ भी पाओ क़त्ल कर दो, यदि मैं ने उन्हें पाया तो क़ौमे ऑद के क़त्ल के समान क़त्ल करूँगा।” (सहीह बुख़ारी एंव सहीह मुस्लिम)

तथा सहीह (मुस्लिम) में है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अत्याचारी शासकों को क़त्ल करने से रोका है जब तक वह नमाज़ पढ़ते हों।”

और जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि एक आदमी ने ख़ैरात दिया, उस के बाद लोगों ने ख़ैरात देना आरम्भ कर दिया तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“जिस ने इस्लाम में कोई अच्छा तरीका निकाला तो उसे इस का अज़्र -बदला- मिले गा और उन लोगों का अज़्र भी जो इसके बाद उस पर अमल करें गे, किन्तु अमल करने वालों के अज़्र में कोई कमी नहीं होगी, और जिस ने इस्लाम में कोई बुरा तरीका अविष्कार किया तो उस पर इस का गुनाह होगा और उन लोगों का भी गुनाह होगा जो इस पर अमल करें गे, किन्तु इन अमल करने वालों के गुनाह में कोई कमी नहीं होगी।” इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

तथा सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वारा इसी के समान एक अन्य हदीस वर्णित है जिसके शब्द यह हैं:

“जिस ने किसी हिदायत -मार्गदर्शन- की ओर बुलाया ... और: जिस ने किसी गुमराही की ओर बुलाया।”

अल्लाह तआला बिद्अती की तौबा स्वीकार नहीं करता

यह बात अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की (मरफूअ) हदीस और हसन बसरी की मुर्सल हदीस से प्रमाणित है, और इब्ने वज़्ज़ाह ने अय्यूब से बयान किया है कि उन्हो ने फरमाया कि: हमारे बीच एक आदमी था जो कोई असत्य विचार रखता था, फिर उस ने वह विचार त्याग दिया, तो मैं मुहम्मद बिन सीरीन के पास आया और कहा आप को ज्ञात हुआ कि फलाने ने अपना विचार त्याग दिया?

उन्हों ने कहा: अभी देखो तो सही वह किस दिशा में जाता है, ऐसे लोगों के संबन्ध में जो हदीस आई है उसका यह अन्तिम भाग उसके प्रारम्भिक भाग से अधिक सख्त है कि “वह इस्लाम से निकल जाएं गे, फिर उसकी ओर पुनः वापस नहीं लौटें गे।”

इमाम अहमद बिन हम्बल -रहमतुल्लाहि अलैहि- से इस का अर्थ पूछा गया तो आप ने फरमाया: ऐसे आदमी को तौबा की तौफीक नहीं होती।”

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ... وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ
 का वर्णन

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنزِلَتِ
 التَّوْرَةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ هَآأَنْتُمْ
 هَؤُلَاءِ حَآجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّونَ
 فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ
 مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ كَانَ
 حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ﴾

(آल عمران: ६५-६७)

“ऐ अहले किताब (यहूद एंव नसार)! तुम इब्राहीम के विषय में क्यों झगड़ते हो? हालांकि तौरात और इन्जील तो उनके बाद उतरी हैं, क्या फिर भी तुम नहीं समझते? सुनो! तुम उस में झगड़ चुके हो जिस का तुम्हें ज्ञान था, फिर तुम उस बात में क्यों झगड़ते हो जिस का तुम्हें ज्ञान नहीं, और अल्लाह

तआला जानता है, और तुम नहीं जानते, इब्राहीम न तो यहूदी थे न ईसाई, बल्कि वह तो एकांत और शुद्ध मुसलमान थे, और मुशिरक -अनेकेश्वरवादी- नहीं थे।” (सूरत आल-इम्रान:६५-६७)

और अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿وَمَنْ يَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهُ وَلَقَدْ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ﴾
(البقرة: ۱۳۰)

“और इब्राहीम के धर्म से वही मुँह मोड़े गा जो मूर्ख होगा, हम ने तो उन्हें दुनिया में भी चुनित बनाया था और आखिरत में भी वह सदाचारियों में से हैं।”

(सूरतुल-बकरह:१३०)

इस विषय में खवारिज से संबंधित हदीस है जो गुज़र चुकी है, तथा सहीह हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“अबू फलाँ के आल मेरे दोस्त नहीं, मेरे दोस्त मुत्तकी (संयमी, ईशभय रखने वाले) लोग हैं।”

और सहीह हदीस में अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से

वर्णन किया गया कि कुछ सहाबा ने कहा कि मैं गोशत नहीं खाऊंगा, दूसरे ने कहा कि मैं रात भर नमाज़ पढ़ूँ गा और सोऊँगा नहीं, तीसरे ने कहा कि मैं औरतों के समीप नहीं जाऊँगा, चौथे ने कहा कि मैं लगातार रोज़ा रखूँगा और नागा नहीं करूँगा। इन की बातें सुन कर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“किन्तु मेरा हाल यह है कि मैं रात को नमाज़ पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ, रोज़ा रखता हूँ और नागा भी करता हूँ, और पत्नियों के पास भी जाता हूँ और गोशत भी खाता हूँ, तो जिस ने मेरी सुन्नत से मुँह मोड़ा वह मुझ से नहीं।”

गौर कीजिए कि जब कुछ सहाबा ने इबादत के उद्देश्य से दुनिया से कट जाने की इच्छा प्रकट किया तो उनके बारे में यह कठोर बात कही गई और उनके काम को सुन्नत से मुँह मोड़ना बताया गया, तो फिर इनके अतिरिक्त बिद्अतों के बारे में और सहाबा के बाद अन्य लोगों के बारे में आप का क्या विचार है?

अल्लाह तआला के फर्मान ﴿فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا﴾ का वर्णन

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتِ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ
النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ﴾ (الروم: ३)

“आप एकांत हो कर अपना मुँह दीन की ओर कर लें, अल्लाह तआला की वह फितरत (प्रकृति) जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है, अल्लाह की सृष्टि को बदलना नहीं है, यही सीधा दीन है, किन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते।” (सूरतुरूम:३०)

तथा फरमाया:

﴿وَوَصَّىٰ بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ يَا بَنِيَّ إِنَّ اللَّهَ
اصْطَفَىٰ لَكُمْ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ﴾
(البقرة: १३२)

“और इसी इब्राहीमी धर्म की वसीयत इब्राहीम ने और याकूब ने अपनी अपनी संतान को की कि ऐ मेरे बेटो! अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए इस धर्म को पसन्द कर लिया है, तो सावधन! तुम मुसलमान हो कर ही मरना।” (सूरतुल बकरह:१३२)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ﴾ (النحل: १२३).

“फिर हम ने आप की ओर यह वह्य भेजी कि आप मिल्लते-इब्राहीम का अनुसरण कीजिए जो कि मुवद्दिहद (ऐकेशरवादी) थे और मुशिरकों में से न थे।”

(सूरतुन-नहल:१२३)

इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“प्रत्येक नबी के अंबिया में से कुछ दोस्त होते हैं, और उन में से मेरे दोस्त इब्राहीम हैं, जो मेरे बाप और मेरे पालनहार के खलील (दोस्त) हैं” इस के बाद आप ने यह आयत पढ़ी:

﴿إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ﴾

“सब से अधिक इब्राहीम से निकट वह लोग हैं जिन्होंने ने उनका अनुसरण किया, और यह नबी, और वह लोग जो ईमान लाए, और मोमिनों का दोस्त अल्लाह है।” (सूरत आल इम्रान:६८)

इस हदीस को त्रिमिजी ने रिवायत किया है।

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, वह बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“अल्लाह तआला तुम्हारे शरीर और तुम्हारे धन नहीं देखता, बल्कि तुम्हारे दिल और तुम्हारे कार्य देखता है।”

बुख़ारी एवं मुस्लिम में इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“मैं हौज़े-कौसर पर तुम सब से पहले उपस्थित रहूँगा, मेरे पास मेरी उम्मत के कुछ लोग पेश होंगे, यहाँ तक कि जब मैं उन्हें देने के लिए बढ़ूँ गा तो

वह मुझ से रोक दिए जाएं गे, मैं कहूँ गा ऐ मेरे पालनहार! यह तो मेरी उम्मत के लोग हैं, मुझ से कहा जाए गा कि आप को ज्ञात नहीं कि आप के बाद इन्होंने क्या क्या बिद्अते अविष्कार की थीं।”

और बुखारी एवं मुस्लिम में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम ने फरमाया:

“मेरी इच्छा थी कि हम अपने भाईयों को देख लेते” सहाबा ने कहा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! क्या हम आप के भाई नहीं? फरमाया: “तुम मेरे असहाब (साथी) हो, और मेरे भाई वह हैं जो अब तक नहीं आए।” सहाबा ने कहा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप की उम्मत के जो लोग अभी तक पैदा नहीं हुए आप उन्हें कैसे पहचान लें गे? फरमाया: “क्या अति श्वेत और काले घोड़ों के बीच अगर किसी का चमकदार माथा और सफेद पाँव वाला घोड़ा हो तो क्या वह अपना घोड़ा नहीं पहचान ले गा?” उन्होंने ने उत्तर दिया: हाँ, क्यों नहीं, आप ने फरमाया: “मेरी उम्मत भी क़ियामत के दिन इस प्रकार उपस्थित होगी कि वुजू के प्रभाव से उनके चेहरे और अन्य

वुजू के स्थान चमक रहे होंगे, और मैं हौजे कौसर पर पहले से उन की प्रतीक्षा कर रहा हूँगा, सुनो! कियामत के दिन कुछ लोग मेरे हौजे-कौसर से ऐसे ही धुत्कार दिए जाएंगे जिस प्रकार पराया ऊँट धुत्कार दिया जाता है, मैं उन्हें आवाज़ दूँगा कि सुनो, इधर आओ, तो मुझ से कहा जाएगा कि यह वह लोग हैं जिन्होंने आप के बाद दीन में परिवर्तन की थी, मैं कहूँगा कि फिर तो दूर हो जाओ, दूर हो जाओ।”

और सहीह बुखारी में है कि पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“जिस समय मैं हौजे-कौसर पर रहूँगा, एक टोली प्रकट होगी, जब मैं उन्हें पहचान लूँगा तो मेरे और उनके बीच से एक आदमी निकलेगा और उन से कहेगा: इधर आओ, मैं पूछूँगा: कहाँ? वह कहेगा: अल्लाह की क़सम जहन्नम की ओर, मैं कहूँगा: इनका क्या मामला है? वह कहेगा: यह वह लोग हैं जो आप के बाद दीन से फिर गए थे। फिर इसके बाद एक अन्य टोली प्रकट होगी -इस टोली के बारे में भी आप ने वही बात की जो पहली टोली के बारे में

में कहा था- इस के बाद आप ने फरमाया: इन में से मोक्ष प्राप्त करने वालों की संख्या भटके हुए ऊँटों के समान बहुत ही कम होगी।”

और बुखारी एवं मुस्लिम में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

उस समय मैं भी वही कहूँगा जो अल्लाह के नेक (सदाचारी) बन्दे -ईसा अलैहिस्सलाम- ने कहा था:

﴿وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي
كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيدٌ﴾ (المائدة: 117).

“जब तक मैं उन के बीच रहा उन पर गवाह रहा, फिर जब तू ने मुझ को उठा लिया तो तू ही उनसे अवगत रहा, और तू हर चीज़ की पूरी सूचना रखता है।” (सूरतुल-माईदा: 999)

तथा बुखारी एवं मुस्लिम में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरफूअन रिवायत है:

“हर बच्चा इस्लाम की फितूरत पर पैदा होता है, फिर उस के माँ-बाप उसे यहूदी या ईसाई या मजूसी बना देते हैं, जिस प्रकार कि चौपाया सम्पूर्ण -बे ऐब- चौपाया जनता है, क्या तुम उन में से कोई चौपाया ऐसा पाते हो जिस के कान कटे फटे हों, यहाँ तक कि तुम ही स्वयं उस के कान चीर-काट देते हो। इस के बाद अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह आयत पढ़ी:

﴿فَطَرَتِ اللَّهُ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا﴾ (الروم: ٣٠)

“अल्लाह की वह फितूरत जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया।” (सूरतुरूम: ३०)

हुज़ैफा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि:

“लोग पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ैर -भलाई- के विषय में प्रश्न करते थे, और मैं आप से शर्र -बुराई- के बारे में पूछता था इस डर से कि मैं उसका शिकार न हो जाऊँ। मैं ने कहा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! हम जाहिलियत और शर्र में पड़े हुए थे, फिर अल्लाह तआला ने हमें ख़ैर -भलाई- की नेमत से सम्मानित किया, तो क्या इस ख़ैर के

बाद भी फिर कोई शर् होगा? फरमाया: “हाँ” मैं ने कहा: क्या इस शर् के बाद फिर खैर का ज़माना आए गा? फरमाया: “हाँ, किन्तु इस में खोट होगी”, मैं ने कहा कि कैसी खोट होगी? आप ने फरमाया: “कुछ लोग ऐसे होंगे जो मेरी सुन्नत और हिदायत को छोड़ कर दूसरों का तरीका अपनाएं गे, तुम्हें उन के कुछ काम उचित मालूम होंगे और कुछ काम अनुचित”, मैं ने कहा क्या इस खैर के बाद फिर शर् प्रकट होगा? फरमाया: “हाँ, भयानक फित्ने और नरक की ओर बुलाने वाले लोग पैदा होंगे, जो उन की सुने गा उसे नरक में झोंक देंगे”, मैं ने कहा ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप हमें उनके औसाफ बता दें, फरमाया: “वह हम में से होंगे और हमारी ही भाषा में बात करें गे”, मैं ने कहा ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! यदि यह समय मुझे मिल जाए तो आप मुझे क्या आदेश देते हैं? फरमाया: “मुसलमानों की जमाअत और उनके इमाम के साथ जुड़े रहना”, मैं ने कहा कि अगर उस समय मुसलमानों की कोई जमाअत और उनका इमाम न हो तो क्या करूँ? फरमाया: “फिर इन सभी फिरकों से अलग-थलग रहना, चाहे

तुम्हें किसी पेड़ की जड़ से चिमटना पड़े यहाँ तक कि इसी हालत में तुम्हारी मृत्यु हो जाए।”

इस हदीस को बुखारी एवं मुस्लिम ने रिवायात किया है, किन्तु मुस्लिम की रिवायत में इतनी वृद्धि है:

“इसके बाद क्या होगा? फरमाया: “फिर दज्जाल प्रकट होगा, उस के साथ एक नहर और एक जहन्नम होगी, जो उस की जहन्नम में प्रवेश करेगा उसका अज़्र साबित हो जाए गा और गुनाह माफ हो जाएं गे, और जो उस की नहर में प्रवेश करे गा उस का गुनाह वाजिब और अज़्र समाप्त हो जाए गा”, मैं ने कहा फिर इस के बाद क्या होगा? फरमाया: “इसके बाद कियामत आ जाए गी।”

अबुल-आलियह फरमाते हैं:

“इस्लाम की शिक्षा प्राप्त करो, और जब इस्लाम की शिक्षा प्राप्त कर लो तो इस से मुँह न मोड़ो, और सीधे मार्ग पर चलते रहो, वही इस्लाम है, और इसे छोड़ कर दायें बायें न मुड़ो, और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर अमल

करते रहो, और असत्य और भ्रष्ट अकाइद और बिदअतों के निकट न जाओ।”

अबुल-आलियह -रहमतुल्लाहि अलैहि- के इस कथन पर गौर करो, कितना ऊँचा कथन है, और उनके उस समय को पहचानो जिस में वह इन भ्रष्ट अकाइद एवं बिदअतों से सावधान कर रहे हैं कि जो इन गलत अकाइद एवं बिदअतों में पड़ जाए वह मानो कि इस्लाम से फिर गया, और किस प्रकार उन्होंने ने इस्लाम की व्याख्या सुन्नत -हदीस- से की है, और बड़े-बड़े ताबईन और उनके विद्वानों पर किताब व सुन्नत की रेखा से निकल जाने का भय प्रतीक कर रहे हैं। अबुल आलियह के कलाम पर गौर करने से आप के लिए अल्लाह तआला के इस फर्मान का अर्थ स्पष्ट हो जाए गा:

﴿إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمَ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ﴾

(البقرة: १३१)

“जब उन के पालनहार ने उन से कहा कि आज्ञाकारी हो जाओ, तो उन्होंने ने कहा कि मैं अल्लाह रब्बुल-आलमीन का आज्ञाकारी हो गया।”

(सूरतुल-बकरह: १३१)

और यह फर्मान:

﴿وَوَصَّىٰ بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ يَا بَنِيَّ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ لَكُمُ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِنَّا وَآئِشُرُ مُسْلِمُونَ﴾
(البقرة: ۱۳۲)

“इसी बात की वसीयत इब्राहीम ने और याकूब ने अपनी अपनी संतान को की कि ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इस धर्म को पसन्द कर लिया है, तो तुम मुसलमान हो कर ही मरना।”
(सूरतुल-बकरह: 932)

और यह फर्मान:

﴿وَمَنْ يَرْغَبْ عَن مِّلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّا مِن سَفَهَةٍ نَّفْسُهُ﴾
(البقرة: ۱۳۰)

“और इब्राहीम के धर्म से वही मुँह मोड़े गा जो मूर्ख होगा।” (सूरतुल-बकरह: 930)

इसी प्रकार की और भी मूल बातें ज्ञात होंगी जो असलुल-उसूल (आधारशिला) हैं और जिन से लोग निश्चेत हैं। अबुल-आलियह के कथन पर गौर करने से इस अध्याय में वर्णित हदीसों और इन जैसी अन्य हदीसों

का भी अर्थ स्पष्ट हो जाए गा, लेकिन जो मनुष्य यह और इन जैसी अन्य आयतों और हदीसों को पढ़ कर गुज़र जाए और इस बात से सन्तुष्ट हो कि इन खतरों का वह शिकार नहीं होगा, और सोचे कि इस का संबंध ऐसे लोगों से है जो कभी थे और अब समाप्त हो गए, तो यह व्यक्ति भी अल्लाह तआला की पकड़ से निडर है, और अल्लाह की पकड़ से वही लोग निडर होते हैं जो घाटा उठाने वाले होते हैं।

और अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लकीर खींची और फरमाया: यही अल्लाह का सीधा मार्ग है, फिर उस लकीर के दायें बायें कई लकीरें खींचीं और फरमाया: यह ऐसे मार्ग हैं जिन में से हर मार्ग पर शैतान बैठा हुआ है और अपनी ओर बुला रहा है, इस के बाद आप ने इस आयत की तिलावत की:

“और यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर चलो, और दूसरे मार्गों पर मत चलो कि वह तुम्हें अल्लाह के मार्ग से अलग कर देंगे, इसी का अल्लाह तआला ने तुम को ताकीदी आदेश दिया है

ताकि तुम परहेज़गार (ईशभय रखने वाले) बनो।”

(सूरतुल-अन्आम: १५३)

इस हदीस को इमाम अहमद और नसाई ने रिवायत किया है।

इस्लाम की अजनबियत और गुरबा (अजनबियों) की विशेषता

अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الثَّرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أَوْلُوا بِقِيَّتِ
يَنْهَوْنَ عَنِ الْمَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ أَنْجَيْنَا
مِنْهُمْ﴾ (هود: ११६)

“पस क्यों न तुम से पहले लोगों में खैर वाले हुए जो धरती पर दंगा फैलाने से रोकते, सिवाय उन थोड़े लोगों के जिन्हें हम ने उन में से नजात दी थी।” (सूरत हूद: ११६)

और अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मरफूअन वर्णित है:

“इस्लाम अजनबियत की अवस्था में आरम्भ हुआ था, और शीघ्र ही पहले ही के समान अजनबी हो जाए गा, तो शुभ सूचना हो गुरबा (अजनबियों) के लिए।”

इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, तथा इसे इमाम अहमद ने अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वारा रिवायत किया है, जिस में यह वृद्धि है:

“कहा गया कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! गुरबा कौन लोग हैं? फरमाया: “अल्लाह के मार्ग में अपने वतन व खानदान को छोड़ देने वाले लोग।”

और दूसरी रिवायत में है:

“गुरबा वह लोग हैं जो उस समय नेक और सदाचारी होंगे जब अधिकांश लोग बिगड़ चुके होंगे।”

और इस हदीस को इमाम अहमद ने सअद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, और इस में यह है:

“पस उस समय खुशखबरी हो गुरबा के लिए जब लोगों के अन्दर फसाद व बिगाड़ आ जाए गा।”

तथा इमाम त्रिमिज़ी ने कसीर बिन अब्दुल्लाह के वास्ते से रिवायत किया है, वह अपने बाप के वास्ते से अपने दादा से रिवायत करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“पस खुशखबरी है उन गुरबा के लिए जो मेरी उन सुन्नतों का सुधार करें गे जिन को लोग बिगाड़ चुके हों गे।”

और अबू उमैय्या से रिवायत है, वह कहते हैं कि मैं ने अबू सअ्लबा खुशनी रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि इस आयत के बारे में आप क्या कहते हैं:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ
مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ﴾ (المائدة: १०५)

“ऐ ईमान वालो तुम अपनी चिन्ता करो, यदि तुम सीधे मार्ग पर चलो गे तो जो पथ-भ्रष्ट है उस से तुम्हारा कोई नुकसान नहीं होगा।” (सूरतुल-माईदा: १०५)

तो अबू सअ्लबह ने कहा कि अल्लाह की कसम! इस आयत के बारे में मैं ने सब से अधिक जानकार अर्थात अल्लाह के पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया था तो आप ने फरमाया:

“बल्कि तुम आपस में एक दूसरे को भलाई का आदेश देते और बुराई से रोकते रहो, यहाँ तक कि जब यह देख लो कि कन्जूसी का पालन किया जा रहा है, खाहिशात की पैरवी की जा रही है, दुनिया

को प्रधानता दी जा रही है, और हर व्यक्ति अपने विचार धारा पर मगन है, तो अपनी चिन्ता करो, और जन साधारण की चिन्ता अपने मन से निकाल दो, क्योंकि तुम्हारे बाद ऐसे दिन आने वाले हैं जिन में दीन पर धैर्य करने वाला आग का अंगारा पकड़ने वाले के समान होगा और उन में अमल करने वाले को ऐसे पचास आदमियों के बराबर अज्र मिले गा जो तुम्हारे ही जैसा अमल करने वाले हों। हम ने कहा कि क्या हम में से पचास आदमी या उन में से पचास आदमी? तो आप ने फरमाया: “बल्कि तुम में से।” इस हदीस को अबू दाऊद और त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है।

इब्ने वज़्ज़ाह ने इसी अर्थ की हदीस इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के तरीक़ से रिवायत की है जिस के शब्द यह हैं:

“तुम्हारे बाद ऐसे दिन आयेंगे जिन में धैर्य करने वाले और आज तुम जिस दीन पर हो उस पर जमे रहने वाले को तुम्हारे पचास आदमियों के बराबर पुण्य मिले गा।”

इसके बाद इब्ने वज़्ज़ाह ने फरमाया कि हम से मुहम्मद बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि हम से असद

ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि हम से सुफ़यान बिन उवैना ने असलम बसरी से और उन्होंने ने हसन के भाई सर्ईद से रिवायत की, वह मरफूअन रिवायत करते हैं, मैं ने सुफ़यान से कहा क्या सर्ईद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मरफूअन रिवायत करते हैं? तो उन्होंने ने कहा हाँ, कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“आज तुम अपने पालनहार के शुद्ध और स्पष्ट मार्ग पर हो, भलाई का आदेश देते हो, बुराई से रोकते हो, और अल्लाह के मार्ग में जिहाद करते हो, अभी तक तुम्हारे अन्दर दो नशे प्रकट नहीं हुए हैं, एक जिहालत का नशा और दूसरा जीवन से प्यार का नशा, और शीघ्र ही तुम इस हालत से फिर जाओ गे, तब न तो भलाई का आदेश दो गे, न बुराई से रोको गे, और न ही अल्लाह के मार्ग में जिहाद करो गे, और तुम्हारे अन्दर दोनों नशे प्रकट हो जाएं गे, उस समय किताब एंव सुन्नत पर जमे रहने वाले को पचास आदमियों के बराबर पुण्य मिलेगा”, पूछा गया क्या उनके पचास आदमी? आप

ने फरमाया: “नहीं बल्कि तुम्हारे पचास आदमियों के बराबर।”

इब्ने वज़्ज़ाह ने एक दूसरी सनद से मुआफरी से रिवायत किया है, वह बयान करते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“खुशखबरी है उन गुरबा के लिए कि जब किताबुल्लाह को छोड़ दिया जाए गा तो वह उस पर अमल करेंगे और जब सुन्नत की रोशनी बुझा दी जाएगी तो वह उस पर अमल करके ज़िन्दा करेंगे।”

बिदअतों पर चेतावनी

इर्बाज़ बिन सारियह रज़ियल्लाहु अन्हु से विर्णित है, वह बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें एक बड़ी ही प्रभावशाली नसीहत की, जिस से हमारे दिल काँप उठे और आँखे आँसू बहाने लगीं, हम ने कहा ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! यह तो अल-विदाई नसीहत जान पड़ती है, तो आप हमें वसीयत कीजिए, आप ने फरमाया:

“मैं तुम्हें अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से डरने और अमीर की बात सुनने और मानने की वसीयत करता हूँ, भले ही कोई दास तुम्हारा अमीर -शासक- बन जाए, और तुम में से जो व्यक्ति जीवित रहे गा वह बहुत मतभेद देखे गा, ऐसी अवस्था में तुम मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत से सम्मानित (मार्ग दर्शित) खुलफ़ाये-राशिदीन का तरीक़ा अपनाओं और उसे दृढ़ता से थामे रहो, और दीन में नयी अविष्कारित बिदअतों से बचो, क्योंकि हर बिदअत पथ-भ्रष्टा है।” इस हदीस को इमाम त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है और इसे हसन कहा है।

और हुज़ैफा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्होंने ने फरमाया:

“हर वह इबादत जिसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम ने इबादत न समझा हो उसे तुम भी इबादत न समझो, क्योंकि उन्होंने ने बाद में आने वालो के लिए किसी बात की गुनजाइश नहीं छोड़ी है, अतः ऐ कारियों की जमाअत! अल्लाह तआला से डरो और अपने असलाफ -पूर्वजों- के तरीके पर गमन रहो।” इस को इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

और इमाम दारमी कहते हैं कि हमें हकम बिन मुबारक ने सूचना दी, हकम बिन मुबारक कहते हैं कि हम से अम्र बिन यह्या ने बयान किया, अम्र बिन यह्या कहते हैं कि मैं ने अपने बाप से सुना, वह अपने बाप से रिवायत करते हैं कि उन्होंने ने फरमाया: हम नमाज़े फज़्र से पहले अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वार पर बैठ जाते और जब वह घर से निकलते तो उन के साथ मस्जिद रवाना होते, एक दिन की बात है कि अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु आए और कहा क्या अबू अब्दुर्रहमान (अब्दुल्लाह बिन मसूऊद) निकले नहीं? हम ने

उत्तर दिया: नहीं, यह सुन कर वह भी हमारे साथ बैठ गए, यहाँ तक कि इब्ने मसूऊद बाहर निकले, और हम सब उनकी ओर खड़े हो गए, तो अबू मूसा अशूअरी उन से सम्बोधित हुए और कहा: ऐ अबू अब्दुर्रहमान! मैं अभी अभी मस्जिद में एक नयी बात देख कर आ रहा हूँ, हालाँकि जो बात मैं ने देखी है वह अल्लहमदुलिल्लाह खैर ही है। इब्ने मसूऊद ने कहा कि वह कौन सी बात है? अबू मूसा अशूअरी ने कहा कि अगर ज़िन्दगी रही तो शीघ्र ही आप भी देख लेंगे, कहा: वह बात यह है कि कुछ लोग नमाज़ की प्रतीक्षा में मस्जिद के भीतर हलके बनाए बैठे हैं, उन सब के हाथों में कंकरियाँ हैं, और हर हलका में एक आदमी नियुक्त है जो उन से कहता है कि सौ बार अल्लाहु अक्बर कहो, तो सब लोग सौ बार अल्लाहु अक्बर कहते हैं, फिर कहता है कि सौ बार ला-इलाहा-इल्लल्लाह कहो, तो सब लोग सौ बार ला-इलाहा-इल्लल्लाह कहते हैं, फिर कहता है कि सौ बार सुब्हानल्लाह कहो, तो सब लोग सौ बार सुब्हानल्लाह कहते हैं। इब्ने मसूऊद ने कहा कि फिर आप ने उन से क्या कहा? अबू मूसा ने जवाब दिया कि आप के विचार की प्रतीक्षा में मैं ने उन से कुछ नहीं कहा, इब्ने मसूऊद ने फरमाया कि आप ने उन से यह क्यों न कह दिया कि

अपने अपने गुनाह शुमार करो, और फिर इस बात का ज़िम्मा ले लेते कि उन की कोई भी नेकी नष्ट नहीं होगी।

यह कह कर इब्ने मसूऊद मस्जिद की ओर रवाना हुए और हम भी उन के साथ चल पड़े, मस्जिद पहुँच कर इब्ने मसूऊद उन हलकों में से एक हलका के पास खड़े हुए और फरमाया: तुम लोग क्या कर रहें हो? उन्होंने ने जवाब दिया कि ऐ अबू अब्दुर्रहमान! यह कंकरियाँ हैं जिन पर हम तकबीर, तह्लील और तस्बीह गिन रहे हैं, इब्ने मसूऊद ने फरमाया: इसके बजाए तुम अपने गुनाह गिनो और मैं इस बात का ज़िम्मा लेता हूँ कि तुम्हारी कोई भी नेकी नष्ट नहीं होगी, तुम्हारी खराबी हो ऐ उम्मते मुहम्मद! कि अभी तो तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा अधिक संख्या में उपस्थित हैं, अभी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के छोड़े हुए कपड़े नहीं फटे, आप के बर्तन नहीं टूटे और तुम इतनी जल्दी तबाही के शिकार हो गए, क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है! तुम या तो एक ऐसी शरीअत पर चल रहे हो जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत से -नऊज़ो बिल्लाहि- श्रेष्ठ है, या गुमराही (पथ-भष्टता) का द्वार खोल रहे हो। उन्होंने ने कहा कि ऐ अबू

अब्दुर्रहमान! अल्लाह की क़सम इस काम से ख़ैर व भलाई के सिवाय हमारा कोई और उद्देश्य न था, इब्ने मसूऊद ने फरमाया: **ऐसे कितने ख़ैर के आकांक्षी हैं जो ख़ैर तक कभी पहुँच ही नहीं पाते**, चुनाँचे अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम से एक हदीस बयान फरमाई है कि एक क़ौम ऐसी होगी जो कुरआन पढ़ेगी, किन्तु कुरआन उन के गले से नीचे नहीं उतरेगा। अल्लाह की क़सम! क्या पता कि उन में से अधिकतर शायद तुम्हीं में से हों।

यह बातें कह कर इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु उनके पास से वापस चले आए। अम्र बिन सल्मह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि इन हलकों के अधिकांश लोगों को हम ने देखा कि नहरवान की लड़ाई में वह खवारिज के साथ-साथ हम से नेज़ा ज़नी कर रहे थे।

अल्लाह तआला ही सहायक और सहयोगी है, और उसी पर हमारा भरोसा है।

وصلی اللہ وسلم علی سیدنا محمد وعلی آلہ وصحبہ أجمعین.

अनुवादक

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*

atazia75@gmail.com